ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 2021
Innovation The Research Concept

बेटी पढ़ाओ योजना

Beti Bachao Beti Padhao Scheme

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 23/09/2021, Date of Publication: 24/09/2021

वेणु साहू
शोधार्थी,
अर्थशास्त्र विभाग,
शासकीय वी.वाय.टी.पी.जी महाविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.), भारत

के. पद्मावती
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र विभाग,
शा. वी. वाई. टी. पी. स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दुर्ग छ.ग., भारत

सारांश

बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ योजना की शुरूआत प्रधानमंत्री द्वारा 22 जनवरी सन् 2015 को पानीपत हरियाणा में किया गया, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना का मुख्य उद्देश्य पूरे माँ की गर्भावस्था से लेकर शिशु की पूरे जीवन -काल में लिंग अनुपात में कमी आई है. जिससे महिला सशक्तिकरण में विकास हुआ है। यह योजना तीन मंत्रालय तथा मानव संसाधन विकास की एक संयुक्त पहल के रूप में समन्वित और अभिसरित प्रयासों से बालिकाओं को संरक्षण और सशक्त बनाना है। सभी राज्यों में सन् 2011 की जनगणना के अनुसार निम्न बाल लिंगानुपात के आधार पर 100 जिलों में एक जिले पायलट जिले के रूप में चयन किया गया है।

Beti Bachao Beti Padhao scheme was launched by the Prime Minister on 22 January 2015 in Panipat, Haryana, the main objective of the Beti Bachao Beti Padhao scheme is to reduce the sex ratio from the entire mother's pregnancy to the entire life span of the child. Due to which there has been development in women empowerment. The scheme is a joint initiative of the three Ministries and Human Resource Development to protect and empower the girl child through coordinated and convergent efforts. According to the 2011 census in all the states, one district out of 100 districts has been selected as pilot district on the basis of low child sex ratio.

मुख्य शब्दः लिंग अनुपात, शिशु लिंग परीक्षण, बेटी, भेदभाव, बालिकाओं का शोषण, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर।

Key words: Sex Ratio, Child Sex Test, Daughter, Discrimination, Exploitation Of Girl Child, Education, Women Empowerment, Self-Reliant.

प्रस्तावना

भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, लेकिन सबसे ज्यादा दुर्भाग्य की बात यह है, कि इस बढ़ती हुई जनसंख्या में लड़कियों का अनुपात लगातार घटता जा रहा है। भारत में सन् 2001 की जनगणना को देखने से यह पता चलता है, कि 100 लड़को पर 927 लड़कियाँ है। हाँलाकि 2011 की जनगणना में यह आंकड़ा बढ़कर 943 लड़किया हो गयी। (UNICEF) आंकड़ा को देखे तो भारत की बाल लिंग अनुपात (CHILD SEX RATIO) में 195 देशों में से 41वाँ स्थान दिया है, यानि कि भारत लिंग अनुपात में 40 देशों से अभी भी पीछे हैं।

भारत देश में बाल लिंग परीक्षण अभी भी चल रही है, इसका मुख्य कारण है लोगों को बालिका के स्थान पर बालक चाहिए। आज भी लोग यह सोचते है, कि लड़के ही उनके परिवार के वंश को आगे बढ़ाती है लड़कियाँ तो परायी होती है ऐसा सोच रखने के कारण ही व्यक्ति माता के गर्भ में ही लिग परीक्षण करवाकर बालिका शिशु की हत्या कर देते है। देश के लिए कितने शर्म की बात है, कि ऐसा करने वालो में खुद डॉक्टर, परिवार के लोग सहमति देते है और ऐसे घृणा अपराध करने वाले व्यक्तियों को सजा भी नही होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस योजना का का मुख्य उद्देश्य प्रथम चरण में PC तथा PNDT ACT को लागू करना है, लोगों को शिशु लिंग परीक्षण न करवाने के लिए संवेदनशील और जागरूक बनाकर सामुदायिक एक जुटता के माध्यम से प्रशिक्षण देना तथा लोगों की सोच को बदलना है। हमें अपनी बेटियों पर बेटो की तरह ही गर्व होना चाहिए तथा हमारा मंत्र भी एक होना चाहिए "बेटा बेटी एक समान" प्रधानमंत्री जी द्वारा इस योजना की शुरूआत करने से शिशु लिंग अनुपात में कमी आई है।

सरकार द्वारा कन्या शिशु के प्रति समाज का नजरिया बदलने का प्रयास कर रही है, जिसमें हरियाणा के बीबीपुर के सरपंच ने Selfie with Daughter पहल की शुरूआत की है, जो भारत और पूरी दूनिया में प्रचलित है। इस पहल में जिस व्यक्ति की बेटी हुई है, वह व्यक्ति अपनी बेटियों के साथ अपनी सेल्फी (Selfie) भेजे। बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं की शुरूआत से ही लगभग सभी राज्यों में Multi –Sectoral District Action Plans चलाए जा रहे है। जिला स्तर के कर्मचारियों तथा Frontime Workers की क्षमता को और बढ़ाने के लिए प्रशिक्षकों को अशिक्षित दिया जाये। अप्रैल से अक्टूबंर 2015 तक इस तरह के नौ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हो चुके है, जिसमें सभी राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को शामिल किया गया है।स्थानीय स्तर पर बेटी बचाओं बेटी पढाओं योजना के तहत पिथौरागढ़ जिले ने बालिका शिशु को बचाने और उनकी शिक्षा की विभिन्न उपाय किए है, जिला कार्यबल और ब्लॉक कार्यबल के आधार पर इन संगठनों की समय-समय पर बैठक आयोजित की जाती है। जिसमें शिशु लिंग अनुपात से संबंधित स्पष्ट रूपरेखा तैयार कर

ली जाती है, इस योजना के अंर्तगत लोगों में जागरूकता लाने के लिए बड़े पैमाने पर विभिन्न स्कूलों, सैनिक स्कूलों तथा सरकारी विभागों कर्मचारियों इत्यादि स्थानों पर विभिन्न रैलियाँ आयोजित की गई है। बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं का उद्देश्य पिथौरागढ़ में नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है, ये नुक्कड़ नाटक केवल गाँव मे ही न होकर खुले बाजारों में भी आयोजित किया जाता है जिससे लोगों में जागरूकता आई।

इस नाटक में कहाँनियों के माध्यम से लिंग आधारित गर्भपात की समस्या, शिशु बालिका से संबंधित समस्याएं तथा उन्हें अपने जीवन काल में कई कठिनाओं का सामना करना पड़ता है, उसे इस नाटकों के माध्यम से दिखाया जाता है।

1. पक्षपाती लिंग चुनाव की प्रक्रिया का उन्मूलन करना।
2. बालिकाओं का अस्तित्व सुरक्षा सुनिश्चित करना॥
3. बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित करना।
4. बालिकाओं को शोषण से बचाना व उन्हें सही / गलत के बारे में अवगत कराना।
5. इस योजना का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से लड़कियों को सामाजिक और वित्तीय रूप् से स्वतंत्र बनाना है।
6. लोगों को इसके प्रति जागरूक करना एवं महिलाओं के लिए कल्याणकारी सेवाएं वितरित करने में सुधार करना है।
7. इस योजना के तहत मुख्य रूप से लड़के एवं लड़कियों के लिंग अनुपात में ध्यान केन्द्रित किया गया है, ताकि Datermation को रोका जा सके।
8. शिक्षा के साथ'-साथ बेटियों को अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ाना एवं उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करना भी इसका मुख्य लक्ष्य रहा है।

साहित्यावलोकन

पंडा एवं मोहंती (2003) ने अपने अध्ययन Status and Empowerment Of Women In India: A Rural Scenario में बताया है, कि एक दशक से अधिक समय से सशक्तिकरण शब्द महिलाओं के साथ जुड़ा हुआ है। सशक्तिकरण शब्द में ही विश्वशक्ति निहित है। प्रत्येक समाज में शक्तिशाली व शक्तिहीन समूह होते हैं, इसलिए भारतीय समाज में भिन्न- भिन्न प्रकार की महिलाओ है। अधिकांश महिलाओ शिक्षा, रोजगार एवं अपने अधिकारों की जानकारी से वंचित है, जो महिलाओं की दुर्दशा को दर्शाता हैं। सशक्तिकरण के क्षेत्र में स्वसहायता समूह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसका कारण है महिलाएं जागरूकता हो रही है।

ब्लूमबर्ग (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि अगर महिलाओ आर्थिक रूप से सशक्त हैं, तो यह उनके सशक्तिकरण की एक महत्वपूर्ण कुंजी है, जो लैंगिक समानता के लिए भी हितकारी है औरकी उन्नति के लिए भी सार्थक है।

"कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास " एक जर्नल के जनवरी (2008) के अंक में बताया है कि महिला सशक्तिकरण में महिलाओं के सतत् विकास हेतु उनका सशक्तिकृत होना परम आवश्यक है। आर्थिक स्वतंत्रता की कमी के कारण महिलाओ विकास की प्रक्रिया में स्वंय सक्रिय रूप से भाग नही ले पा रही है।

विश्लेषण

1. बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक सामाजिक आंदोलन और समान मूल्य को बढ़ाना देना व जागरूक अभियान का कार्यान्वयन करना।
2. इस मुद्दे को सार्वजनिक विमर्श का विषय बनाना और उसे संशोधित करते रहना सुशासन का पैमाना बनेगा।
3. निम्न लिंगानुपात वाले जिलों की पहचान कर ध्यान देते हुए गहन और एकीकृत कार्यवाही करना।
4. सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत के रूप में स्थानीय महिला संगठनों/युवाओं की सहभागिता लेते हुए पंचायती राज्य संस्थाओं स्थानीय निकायों और जमीनी स्तर पर जुड़े कार्यकर्ताओं को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करते हुए सामाजिक परिवर्तन के प्रेरक की भूमिका में ढालना जिला/ब्लॉक/जमीनी स्तर पर अंतर क्षेत्रीय और अंतर संस्थागत समायोजन के समक्ष करना।
5. महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति हो रहे अत्याचारों और अपराधों की रोकथाम करना।
6. महिलाओं एवं बालिकाओं की शिक्षा व उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर जोर देना।

बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ निवेश योजना

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की बेटियों के उत्थान के लिए एवं उन्हें स्वावलंबी बनाने के लिए इस योजना की शुरूआत की है, इस योजना से देश में लोगो की बेटियों के प्रति नजरियाँ बदला है। लेकिन समस्या की बात यह है कि अब फ्रॉड करने वाले लोगो ने इस योजना की लोकप्रियता को भुनाना शुरू कर दिया है।

राष्ट्रीय बालिका दिवस -सोशल मीडिया पर वायरल एक तस्वीर में बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना के तहत केंद्र सरकार द्वारा 2 लाख की नगद राशि मदद देने का दावा किया जा रहा है, लेकिन

यह बात संदेह में कहा गया है कि राष्ट्रीय बालिका दिवस के मौके पर बटी बचाओ बेटी पढ़ाओं योजना में सरकार की तरफ से 2 लाख की नकद राशि दी जा रही है।

बेटी बचाओं योजना के नाम पर फ्रांड

बेटी बचाओं योजना के तहत फॉर्म भेजने का पता भी भारत सरकार महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन,दिल्ली बताया गया है, दिल्ली में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की तरफ से निर्देश दिया गया है कि उनके संज्ञान में पहले ही कई बार ऐसे धोखाधड़ी की **घटनाएं** आ चुकी है, जिससे बचने के लिए उन्होने अपनी अधिकारिक वेबसाइट पर चेतावनी भी जारी की है।योजना के नाम पर हो रही है ठगी-सरकारी एजेंसी पीआईबी ने भी इस तरह की किसी नकद मदद से इन्कार किया है, वास्तव में लोगों को सरकार से दो लाख रूपये पाने का लालच दिलाकर कुछ धोखेबाज 200-500 रूपये में फॉर्म बेच रहे है, फिर उसे भरने सरपंच से सत्यापित कराने और दिल्ली भेजने के नाम पर 500 रूपये और ठग रहे है एक व्यक्ति को इस चक्कर में कुल 1,000 रूपये का चूना लगाया जा रहा है।

बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओ के नाम में बदलाव, ईरानी ने बताया महिला सशक्तिकरण का प्लान - सामाजिक मानदंडो पर जोर देते हुए गॉव की महिला नेताओं को रोल मॉडल के रूप में विज्ञापित किया जाना चाहिए BADLAV तहत सामाजिक मानदंडो को बदलने के लिए मासिक मीडिया का प्रयोग किया जाना चाहिए, इकोनॉमिक सर्वे 2019 में बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं स्कीम का नाम बदलने का प्रस्ताव दिया गया है। अगर इसे मंजूरी मिली तो लैंगिंक समानता के लिए काम करने वाली इस योजना को अब BADLAV (बेटी आपा धन लक्ष्मी और विजय- लक्ष्मी) के नाम से जाना जाएगा।

महिला एवं बाल विकाय मंत्री स्मृति ईरानी ने लोगों को यह संदेश दिया है जिसमे महिलाओं को सामाजिक मानदंडों और देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देना तथा BADLAV (बेटी आपा धन लक्ष्मी और विजय- लक्ष्मी) की शुरूआत की गई हैं। बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं में बेटी आपकी धन लक्ष्मी और विजयलक्ष्मी तक का सफर, बेटियों को सशक्त बनाने और एक नया मापदंड देने जिसमें महिलाओं के लिए सरकारी प्रक्रियाओं को सरल बनाना, उत्पीड़न और भेदभाव की घटनाओं का रिपोर्ट करना, बैंक खाते खोलना, पासपोर्ट बनाने का अहम भूमिका है।

इस मुहिम में गांव के महिला नेताओ को रोल मॉडल के रूप में आगे लाना तथा सामाजिक मानदंडों को बदलने के लिए मासिक मीडिया का उपयोग करना। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि कार्यस्थलों और सामाजिक स्थानों पर यौन उत्पीड़न से संबंधित पोस्टर न लगाया जाय इस प्रकार की घटनाओं को स्वीकार नही किया जा सकता इसके साथ ही टीवी पर लगातार विज्ञापन भी लैंगिक समानता को सकारात्मक आदर्श के रूप में पेश किया जाना गलत है। महिलाओं को प्रतियोगिता के रूप मे इनाम देना भी महिलाओं को सशक्त बनाना है। BADLAV में नौकरियों में महिला आवेदकों के लिये आवेदन शुल्क माफ किया जाएगा।

परिणाम

गरीबी -देश में सरकार द्वारा बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना का शुभांरभ कर दिया गया हैं, फिर भी लोग गरीबी के कारण अपने बालिका को आगे पढ़ाने में सक्षम नही होता है। व्यक्ति की पहले से ही दो संतान होने की वजह से भी यदि तीसरा संतान बालिका हो तो भी उसे माता की कोख में ही मार दिया जाता है। लोगों की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर रहता है, कि अपने परिवार की जीविकोपार्जन की आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर पाते है, केवल मुख्य जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यक्ति अपना जीवन भर संघर्ष करते रहता है। माता -पिता कई बार अपनी बच्चियों के लिए कापीयाँ, पुस्तकें लेने में असमर्थ रहता है,जिससे बालिका आगे पढ़ नही पाती और पढ़ाई को ड्राप (छोड़कर) अपने जीविकोपार्जन के लिए मजदूरी का कार्य करने जाती है।

रूढ़िवादी -भारत देश ग्रामीणों (गाँवो) का देश है,यहाँ अधिकांश जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है। ग्रामीण लोग अधिकांश अशिक्षित एवं रूढ़िवादी प्रथा को ज्यादा महत्व देती है,लोगों का यह सोच है कि लड़कियाँ आगे पढ़ -लिख कर क्षा करेगी आखिर उसे विवाह करके दूसरे घर जाकर चुल्हे चैका ही सम्भालना है ऐसा सोच रखने के कारण ही लड़कियों को पढ़ाते नही है। कई व्यक्ति यह भी सोचते है कि उनके वंश को चलाने के लिए एक लड़का ही होता है और लड़के की चाह में ही लड़कियाँ पैदा नही करना चाहते है।

बेटे की चाह रखने वाले लोग यह नही सोचते की जिस बेटी का अंत माँ की कोख में ही करते है,वही आगे चलकर ही बेटे को जन्म देंगी यदि इसी तरह बेटियों की हत्या करते जायेंगे तो देश में बेटियों की कमी होगी और फिर से बहुपत्नियाँ वाली किस्सा दोहराया जायेगा और एक दिन ऐसा भी आयेगा जब उनके बेटे के लिए लड़कियाँ मिलना मुश्किल हो जायेंगा।

बालिका शिक्षा में कमी -बालिकाओं को अभी तक घर की चार दीवारी के बीच में ही रखा जाता है,उन्हें खुलकर स्वतंत्रता नही दी जाती है। बालिकाओं की शिक्षा में भी अंतर किया जाता है, यदि एक घर में लड़का और लड़कियाँ एक ही स्थान में एक कक्षा में पढ़ रहे हो तो लड़के को अच्छे विद्यालय में और लड़कियों को निम्न सरकारी स्कूल में दाखिला करवाया जाता है।

जनजातियाँ -छत्तीसगढ़ में अधिकांश जनजातीय समुदाय निवास करती है, और इनके क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं एवं संसाधनों (विद्यालय, शिक्षक) का अभाव होता है। ऐसे में जनजातीयाँ समुदाय के लोग अपने बच्चों को पढ़ाने में असमर्थ रहता है, जिससे की बेटियाँ कम पढ़ी लिखी होती है या फिर शिक्षा ही ग्रहण नही कर पाती है।

बलिका शिक्षा में कमी -जनजातीय शिक्षा व्यवस्था में बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति बहुत ही दयनीय स्थिति है, बालिकाएं पढाई छोड़कर घर बैठ जाती है। शिक्षा के सभी स्तरों पर अनेक कारणों जैसे प्राथमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण न कर पाना बीच में ही ड्राप आउट करती है, ड्राप आउट करने का कारण विद्याालय की दूरी अधिक होना अपने छोटे भाई - बहनों की देखभाल करना, यातायात की सुविधा न होना, घरेलू कार्यो में व्यस्त रहना आदि ऐसे अनेक कारणों से लड़कियाँ आगे पढ़ाई नही कर पाती है।

निष्कर्ष

बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना सरकार द्वारा भले ही चलाई जा रही है, लेकिन जनजातीय समुदाय में यह योजना अभी भी पिछड़ा हुआ है अधिक शिक्षा ग्रहण किये हुए लोग ही इस योजना में सहभागी है। जो व्यक्ति अधिक पढ़े - लिखे या उच्च पद पर पदस्थ है, उन्ही की बेटियाँ ही आगे पढ़ाई कर रही है मध्यम वर्गीय परिवार की बेटियाँ केवल शिक्षित ही हुई है। सरकार द्वारा लोगों में यह सोच भी लाया गया था कि बेटा बेटी एक समान, समान कार्य समान वेतन फिर भी लोग बेटियों की अपेक्षा अपने बेटों को ज्यादा महत्व देते है। लेकिन अभी कुछ वर्ष पहले ही साक्षरता की प्रतिशत देखे तो अब लड़कियाँ ज्यादा शिक्षित हुई है, लेकिन फिर भी कार्यक्षेत्रों में पुरूषों की ही दबदबा अभी भी बना हुआ है, महिलाओं को अपने से कम समझा जाता है तथा इन्हे दबाने की कोशिश करता है।

अभी कुछ ही वर्षों की आकड़े देखे तो लड़कियों की शिक्षा अधिक है, लड़कों की कम विवाह के लिए अब यदि लड़कियाँ देखने जाते है, तो अक्सर यह सुनने में आता है, कि लड़कियाँ ज्यादा पढ़ी - लिखी रखती है।अब सरकार को एक और योजना चलाना चाहिए जिसमें ‘‘बेटी बचाओं लड़के पढ़ाओं’’। शिक्षा ही सबसे ताकतवर हथियार होता है, जिसका इस्तेमाल करके आप दुनिया बदल सकते हैं। ऊपर लिखी गई वाक्य इसलिए चरितार्थ है, क्योकि जब लड़के अपने विवाह के लिए लड़कियाँ देखने जाते है, तो लड़के से ज्यादा हमेंशा लड़कियाँ पढ़ी - लिखी रहती है।

अब मानसिक रूप से सभी जन समुदाय में यह सोच लाना होगा कि बेटी भी बेटों से कम नही है, जो कार्य अब तक लड़के करते थे अब वही कार्य लड़कियाँ भी कर रही है, बेटों की चाह रखने वाले बेटियों को मजबूत एवं सशक्त बनाइए और उन्हें आगे बढ़ने में पूर्ण सहयोग दे। यदि हम प्राचीन काल रामायण की बात करे तो भी उसमें देखने को मिलेगा कि राजा दशरथ के बेटे जब वनवास प्रस्थान करते है, तो राजा जनक की बेटियाँ ही राजा दशरथ की राज - पाठ को सम्भालती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Archna, G Dialing in rural prosperity through universal cellular connectivity-Kurukshetra-A Journal Of Rural Development, Ministry Of Rural Development. Government Of India. 2008; 57: I. ISSN-0021-5660.*
2. *Blumberg, R. L. (2005). Women's economic empowerment as the magic potion of development. In 100th Annual Meeting Of the American Sociological Association, August, Philadelphia.*
3. *Panda, B., Mohanty, S. (2003). Status and empowerment of women in India: a rural Scenario. Man and Life, 29(3-4),205-212.*
4. *Hi.m.wikipedia.org*
5. *https:// hi.m.wikipedia.org*
6. *https://www.sarkariyojana.com*
7. *https://www.tv9hindi.com*
8. *https://www.aajtak.in>india>story*
9. *M.economictimes.com*